विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:- ०१/०९/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-दशम: पाठनाम जटायो: शौर्यम्

श्लोक३. तं शब्दमवसुप्तस्तु जटायुरथ शुश्रुवे ।

निरीक्ष्य रावणं क्षिप्रं वैदेहीं च ददर्श स:।।

अन्वय:- अथ अवसुप्त: जटायु: तु तं शब्दम् शुश्रुवे रावणं स: निरीक्ष्य स: च क्षिप्रं वैदेहीं ददर्श ।

शब्दार्था: -

अवसुप्त:- सोए हुए , क्षिप्रम् - शीघ्र , अथ - इसके बाद , शुश्रुवे – सुना

निरीक्ष्य – देखकर , वैदेहीं - सीता को , ददर्श - देखा

अर्थ- इसके बाद सोए हुए जटायु ने उस शब्द को सुना तथा रावण को देखकर शीघ्र ही वैदेही (सीता)को देखा ।

श्लोक४. तत: पर्वतशृङ्गाभस्तीक्ष्णतुण्ड: खगोत्तम:।

वनस्पतिगत: श्रीमान्व्याजहार शभां गिरम्।।

अन्वय:- तत: पर्वतशृंगाभ: तीक्ष्णतुण्ड: वनस्पतिगत: श्रीमान् खगोत्तम: शुभाम् गिरम् व्याजहार ।

शब्दार्था:

तत:- उसके बाद , पर्वतशृंगाभ:- पर्वत की चोटी की तरह, शीभाम् – सुन्दर

तीक्ष्णतुण्ड: -तीखी चोंच वाले ,खगोत्तम:-पक्षियों में उत्तम , गिरम् – वाणी को ,

वनस्पतिगत:-वृक्षपर स्थित श्रीमान् – शोभायुक्त , व्याजहार – बोला

अर्थ - उसके बाद (तब)पर्वत शिखर की तरह शोभा वाले , तीखे चोंच वाले ,वृक्ष पर स्थित ,शोभा युक्त पक्षियों में उत्तम (जटायु) ने सुन्दर वाणी में कहा।